International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 440-442

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 440-442
www.allresearchjournal.com
Received: 28-06-2015
Accepted: 31-07-2015

डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

रीति मुक्त काव्य परम्परा और घनानन्द

शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। साहित्य के अनेक रूप यहां देखने को मिलते है यहां तक कि केवल रीति काल में ही भिन्न भिन्न काव्य धाराएं बहती दिखाई देती हें।रीति सिद्ध के अतिरिक्त रीति मुक्त धारा के कवियों ने हिन्दी साहित्य को स्मृद्ध किया है। रीति मुक्त धारा के विषय में डॉ विश्वनाथ प्रसाद ने स्पष्ट किया है– जो रीति बद्ध रचना को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे जो रीति में बंधना नहीं चाहते थे इसी से इन्हे रीतिमुक्त या स्वछन्द कवि कहना उपयुक्त प्रतीत होता है। [1] इन रीति मुक्त कवियों ने पुरानी रीति परम्परा को तोड कर एक नई काव्य धारा का सूत्रपात किया। घनानन्द बोधा आलम तथा ठाकुर इस परम्परा के कवि हैं। इन्होंने स्वछन्द और उन्मुक्त प्रेम को अपने काव्य में स्थान दिया। रीति मुक्त परम्परा के कवियों में श्रृंगार वर्णन बडा ही मर्यादित एवं सुन्दर है।`। उनके काव्य में अश्लीलता कहीं भी नजर नहीं आती। रीति मुक्त कवियों ने एक तरह से कविता को अतिशय श्रृंगारिकता से निकाल कर उसे उसी स्थान पर विराजमान कर दिया जिस की नितान्त आवश्यकता थी।

रीतिकालीन काव्य में श्रृंगाररस का प्राधान्य सर्वविदित है [2]।रीति बद्ध कवि मतिराम देव सेनापति आदि कवियों ने स्थूल प्रेम का वर्णन किया । प्रेम की अन्तः मुखी शक्ति को किसी ने नहीं पहचाना। कुछ कवि ऐसे हों प्रेसा नहीं है अपितु भक्तिकाल में ही इस प्रकार के कवि दिखाईदेते हैं। रसखान और आलम पर किसी भी अन्य कवि का प्रभाव दिखाई नहीं देता। रीति कालीन कवियों में घनानन्द बोधा और ठाकुर ने रीतिमुक्त काव्य लिखकर एक पृथक काव्य धारा को प्रवाहित किया । इन्होंने प्रेम के उदात्त रूप को ही महत्व दिया तथा सरल भाव से काव्य रचना की [3]।इन रीति मुक्त कवियों में रीति बद्ध कवियों की चतुरता एव चपलता लेश मात्र भी दिखाई नहीं देती। उनकी सहृदयता एव सरलता का चित्रण उनके पदों में स्पष्ट देखा जा सकता है–

अति सुधो सनेह का मारग है जहां नैकु सयानप बांक नहीं।
जहां सांच चले तजि आपुनपौ झिझकें कपटी जे निसांक नहीं।।

इन रीति मुक्त कवियों में सच्चे प्रेम का प्रवाह स्वतः देखा जा सकता है [4]।उनका प्रेम एकनिष्ठ सच्चा एवं लोकलाज से परे है। इन प्रेम के सच्चे पुजारियों के हृदय में अपने प्रिय के प्रति भावों का सागर ठाठें मारता दिखाई देता है।गोपियों के प्रेम की तरह अनन्य प्रेम को ही सर्वस्व मानां। भक्ति काल में रसखान ने सर्वप्रथम अनन्य प्रेम का आदर्श साहित्य में स्थापित कियां रसखान ने रसमय निस्वार्थ विशुद्ध प्रेम को उन्नत कोटि का प्रेम माना है–[5]

रस मय स्वाभाविक बिना स्वारथ अचल महान
सदा एक रस शुद्ध सोइ प्रेम अहै रसखान।।

वैसे तो सारे रीति मुक्त कवि एक से बढ कर एक हैं परन्तु भाव की जो गहराई घनानन्द की अभिव्यक्ति में दिखाइ देती है उस का कोईसानी नहीं हे [6]। घनानन्द का एक निष्ठ प्रेम सर्वविदित हैं।उनके हृदय में अपने प्रिय के अतिरिक्त और किसी का स्थान नहीं था। उनका सुजान के प्रति कथन स्वयं प्रमाण है–

घनानन्द प्यारे सुजान सुनो यही एक तें दूसरों आंक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढे हो कहो मन लेत हेा देत छटांक नहीं।।

बोधा ने भी प्रेम के आदर्श को महत्व दिया। घनानन्द से वे पीछे नही हैं।उनका भी विचार है कि सच्चे एवं एकनिष्ठ प्रेम ही सर्वोत्तम है जिसकी संसार भी प्रशंसा करता है–

भांति अनेक प्रीतिै जग मांही सब ही सरस कोउ घट नाहीं।
जको मन विरझौ है जामैं। करे पुनि सुखी होई सोई सखि तावें।
तातें सुनी यारी दिलदायक ।कीजै प्रीति निवहवे लायक ।
प्रीति करै पुनि और निवाही सो अशिक सब जगत सराहै।।

ठाकुर कवि भी इसी तरह निस्वार्थ और निष्काम प्रेम को आदर्श प्रेम मानते हैं [7]। उनका दृष्टिकोण उनके ही शब्दों में देखिए–

एकही सों चित चहिए ओर ला बीच दगा कौ परै नहीं डांको।
मानिक सो मन बेंचिके मोहन फेरिकहा पर खाइबो ताको ।
ठाकुर काम न या सब को अब लाखन में परवान है जाको ।
प्रीति कौरे में लगे है कहा करिकै इन ओर निबाहिबो बांको।।

इस तरह ये तीनों रीति मुक्त धारा के कवियों ने एक स्वर से पवित्र एक निष्ठआदर्श प्रेम की बात की है यह अन्य कवियों में दिखाई नहीं देता।ये तीनों कवि स्वयं एकनिष्ठ प्रेम के राही थे इन्होंने आजीवन एकनिष्ठ प्रेम किया और प्रेम की असफलता के कारण इनके हृदय का तारतार झंकृत होता रहा [8]। इनके हृदय से विरह वेदना की मार्मिक और हृदय स्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। इनकी यह विशेषता है कि जब रीतिबद्ध कवि वासनामय प्रेम का वर्णन करते रहे तब ये कवि अन्तः मुखी होकर हृदय के सच्चे उदगारों कों अभिव्यक्त करते रहे । इन्होंने कविता किसी राजा अथवा सामन्त के मनोविनोद के लिए नही लिखी अपितु इन्होंने प्रेम की पीर की अभिव्यक्ति की।

वस्तुतःइन कवियों में प्रेम की विभोरता किसी न किसी रूप मे स्पष्ट दिखाई देती है। घनानन्द पर प्रेम का जो नशा था वह इन दोनों कवियों के नशे से बहुत बढा चढा था। घनानन्द तो प्रेम के दीवाने ही थे। बोधा भी प्रेम की मदिरा से थक चुके थे। बोधा के काव्य का विषय कथा प्रधान होने के कारण प्रेम की उतनी तीव्र व्यंजना उनके काव्य में नहीं है जितनी घनानन्द के काव्य में दिखाई देती है फिर भी बोधा का काव्य

बडा मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी है। घनानन्द के काव्य का अलग ही अन्दाज है। अपने अनन्य प्रेम के बारे में घनानन्द का कथन द्रष्टव्य है–

कबहुं मिलिबो कबहुं मिलिबो यह धीरज ही में धरबो करै।
उर तैं कढि आवे गरे तैं फिरै। मन ही मनही में सिखो करैं
कवि बोधा न चाव सरी कबहुं नित ही हरबा सों हिरैबो करै।
कहते ही बनै सहते ही बनै मनही मन पीर पिरैबो करै।।

ठाकुर ने भी घनानन्द की तरह अपने दिल का हाल खोल कर रख दिया है। उन्होंने दिल की विवशता का उल्लेख खुल कर किया है।[9]

गति मेरी यही निसिवासर है चित तेरी गलीन के गहने हैं।
चित कीनो कठोर कहा इतनो अब मोहि नहीं यह चाहने हैं।
कवि ठाकुर नेक नहीं दरसो कपटीन को काह सराहने हैं।
मन भावै सुजान सोई करियो हमें नेह कौ नातौ निबाहनो है।

ठाकुर की ही तरह घनानन्द और बोधा भी निश्छल प्रेम के प्रवाह की इसी प्रकार अभिव्यक्ति करते हैं। घनानन्द का एक पद देखिए–

इत बांट परी सुधि रावरे भूलनि कैसे उराहनो दीजिए जू।
अब तौ सब सीस चढाय लइ जु कछु मन भाई सो कीजिए जू।
घनआनन्द जीवन प्रान सुजान तिहारियौ बातनि जीजिए जू।
नित नीके रहो तुम्हें चाह कहा पे असीस हमारियौ लीजिये जू।।

प्रेम की पीर की अभिव्यक्ति प्रायः सभी कवियों में एक समान जान पडती है। कुछ विद्वान मानते हैं कि ये सभी कवि सूफियों से प्रभावित थे। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद का मानना है कि वेदना की प्रवृत्ति सूफी कवियों से ही आई है परन्तु इस प्रेम की पीर का प्रभाव सभी कवियों पर एक समान नहीं हैं [10]। घनानन्द पर तो वे बिल्कुल ही प्रभाव नहीं मानते।इसका प्रमुख कारण यह है कि भारतीय साहित्य में वियोग श्रृंगार को आरम्भ से ही विशेष महत्व प्रदान किया गया हैं। विद्यापति एवं कृष्ण भक्त कवियों ने विरह –वेदना का जो वर्णन किया है वह शुद्ध भारतीय है। केवल बोधा ही ऐसे कवि हैं जिन पर सूफियों का अधिक प्रभाव पडा। बोधा का एक पद देखिए–

जब ते विछुरे कवि बोधा हितू तब ते उर दाह थिरा तो नहीं ं
हम कौन–सी पीर कहैं अपनी दिलदार तो कोउ दिखातो नहीं।

ठाकुर कवि पर सूफियों का प्रभाव न के बराबर है। उत्कट प्रेम का खिलाडी यह कवि प्रेम का खेल खेलता रहा। उसके समक्ष हार–जीत का कोई प्रश्न नहीं था। ठाकुर में प्रेम की दृढता सर्वाधिक दिखाई देती है। यही कारण है कि उनका प्रेम भाव का वर्णन बडा स्वाभाविक एवं बेमिसाल है। ठाकुर और घनानन्द में तुलना करें तो स्पष्ठ दिखाई देता है कि ठाकुर की तुलना में घनाननद का कला पक्ष अधिक प्रौढ है जिससे घनानन्द का काव्य अधिक क्लिष्ट हो गया है जो सामान्य पाठक के लिए दुरुह है। ठाकुर का काव्य इस दृष्टि से सुगम्य है।

आचार्य शुक्ल ने ठाकुर कों उत्तम कवि माना है [11]। शुक्ल का कहना है कि ठाकुर बहुत ही सच्ची उमंग के कवि थे ।इनमें कृत्रिमता जरा भी नही है। ठाकुर की कविता में लोक प्रचलित त्योहारों और उत्सवों को भी स्थान दिया गया है। इस तरह ठाकुर घनानन्द और बोधा से भिन्न कवि हैं।

घनानन्द का काव्य पक्ष अधिक सुगढ एवं प्रौढ दिखाई देता है। लगभग छः सौ कवितों और सवैयों में अपने उदगार घनानन्द ने व्यक्त किए हैं। घनानन्द विप्रलम्भ श्रृंगार के अधिकारी कवि हैं। अनेक दशाओं का जैसा मार्मिक वर्णन उन्होंने किया है वैसा बोधा और ठाकुर नही कर सके। उनका कला पक्ष इतना प्रौढ और विकसित है कि रीति काल का कोई भी कवि उनके समक्ष नहीं ठहर सकता । उनके कला पक्ष को निम्न लिखित उदाहरण से समझा जा सकता है जिसमें विरहिणी नायिका की दयनीय दशा का वर्णन करते हुए कवि बडे मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है–

सावन आगम हेरि सखी ं। भवन–आवन चीय विसेखी।
छाप कहूं घन–आनन्द जान सम्हारि की ठौर–लै भूलनि लेखी।
बूंदें लगें सब अंग दगैं उलटी गति आपने तापनि पेखी।
पीन तें जागति आगि सुनी ही पै पानी में लागति आंखिन देखीं।

महाकवि घनानन्द की अन्य विशेषताओं में उनके काव्य में कलापक्ष के विभिन्न उपकरणों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। यही कारण है कि कवि के भाव सौंदर्य में कहीं कोई कमी नहीं आई हैं [12]। कहीं कहीं सांग रूपक का प्रयोग भी उनकी कविता में भावातिरेक उत्पन्न कर देता है और पाठक को अलंकार का

आभास नहीं होता–

विरहा–रवि सो घटव्योम तप्यो बिजरी सी खिवें इकली छतियां।
हिय सागर में दृग मेघ भरे उघरे बरसें कदन औं रतियां ।
घन–आनंद जान अनोखी दसा न लखौं दई कैसे लिखों पतियौ।
नित सावन दीठ सु बैठक में टपकै बरुनी तिहि औलतिया ।।

इस तरह घनानन्द बोधा और ठाकुर की तुलना में प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ठ हैं। प्रेम की अभिव्यक्ति में उनका कोई मुकाबला नहीं है। प्रेम की अनेक अवस्थाओं के विप्रलंम्भ श्रृगार की सूक्ष्म भावनाओं प्रकृति के विभिन्न रूपों तथा काव्य कला की प्रौढता आदि सभी दृष्टियोंसे कवि को महाकवि की उपाधि से अलंकृत किया जा सकता है। 13

संदर्भ सूचि

1. श्री विश्वानाथ प्रसाद मिश्र घनानन्द ग्रन्थावली भूमिका पृ 48
2. उपरोक्त उपरोक्त पृ 196
3. डॉ मनोहर लाल गौड घनानन्द और स्वछन्द काव्य धारा पृ 243
4. उपरोक्त उपरोक्त पृ 244
5. उपरोक्त उपरोक्त पृ 254
6. उपरोक्त उपरोक्त पृ 07
7. उपरोक्त उपरोक्त पृ 270
8. उपरोक्त उपरोक्त पृ 241
9. उपरोक्त उपरोक्त पृ 281
10. उपरोक्त उपरोक्त पृ 250
11. श्री रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 386
12. डॉ मनोहर लाल गौड घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा पृ 17
13. उपरोक्त उपरोक्त पृ 184